Need to establish institutes for research on works of poet Ramdhari Singh Dinkar

श्री भूपेन्द्र यादव (राजस्थान): सम्माननीय सभापति महोदय, हम 23 सितंबर को रामधारी सिंह "दिनकर" जी की जन्म जयंती के रूप में मनाते हैं। बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया में जन्मे राष्ट्रकवि रामधारी "दिनकर" को बचपन में लोग ननुआ कहते थे। उनके पढ़ने की इच्छा को देखते हुए उनके भाइयों ने अपनी पढ़ाई रोककर उन्हें पढ़ाया। मैट्रिक करने के बाद रामधारी सिंह "दिनकर" जी ने पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. किया। उन्होंने कुछ समय के लिए नौकरी की, लेकिन मुजफ्फरपुर के एक कार्यक्रम में देशभक्त कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी आए और उन्होंने अपने भाषण में कहा, "हमारे राष्ट्रीय कवि जब चाँदी के टुकड़े पर बिकते हों, तो साहित्य में हम राष्ट्रीयता की बात कैसे कर सकते हैं?" यह बात "दिनकर" जी के हृदय को बेध गई और उन्होंने बिना देर किए, उसी समय सरकारी नौकरी को छोड़ दिया। उनकी रचनाएं बेगूसराय से निकलने वाली पत्रिका "प्रकाश" में सबसे पहले छपनी शुरू हुईं। एक रोज बाद पत्रिका के संपादक ने कहा कि, "आप प्रकाश के मुख्य स्रोत हैं", तब उन्होंने सोचा कि प्रकाश का स्रोत तो सूर्य होता है और इस स्रोत से प्रेरित होकर उन्होंने अपने नाम के साथ सूर्य का पर्यायवाची "दिनकर" लगाना शुरू किया। "दिनकर" जी द्वंद्व के कवि माने जाते थे। उनकी कविताओं में युद्ध और शांति को लेकर गहन द्वंद्व, विमर्श मिलता है और उनकी राय बिना किसी लाग-लपेट के एकदम स्पष्ट होती थी।

महोदय, आज़ादी के बाद वे कांग्रेस की तरफ से राज्य सभा में आए थे। उनका अपने विचारों को रखने का तरीका इतना अच्छा था कि लोहिया जी की "दिनकर" से बड़ी गहरी मित्रता थी। जब लोहिया जी संसद में पहुंचे, तो दोनों के बीच बड़ी बहस होती थी। इस पर "दिनकर" जी ने एक कविता लिखी थी।

"तब भी माँ की कृपा, मित्र अब भी अनेक छाए हैं,
बड़ी बात तो यह है कि लोहिया संसद में आए हैं।
मुझसे पूछते हैं, दिनकर कविता में जो लिखते हो,
वह सत्य है या कि वह जो तुम संसद में दिखते हो?
मैं कहता हूँ कि मित्र, सत्य का मैं भी अन्वेषी हूँ,
सोशलिस्ट ही हूँ, लेकिन कुछ अधिक ज़रा देशी हूँ।"

हमारे उपसभापति जी भी उतने ही देशी सोशलिस्ट हैं। दिनकर जी ने गद्य और पद्य, दोनों में बराबर के अधिकार के साथ कलम चलाई और दोनों ही विधाओं में उनकी रचित कृतियाँ सम्मानित भी हैं। आजादी के बाद लिखे उनके शोध ग्रंथ, "संस्कृति के चार अध्याय" के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तो वहीं महाकाव्य, "उर्वशी" के लिए उन्हें प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ सम्मान मिला। भारत सरकार की तरफ से उन्हें पद्म भूषण सम्मान से विभूषित किया गया। 1999 में भारत सरकार ने उन पर डाक टिकट भी जारी किया।

महोदय, मेरा आपके माध्यम से एक निवेदन है कि भारतीय संसद का पुस्तकालय देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है। दिनकर जी भारतीय भाषा के बड़े कवि हैं और सांसद तथा प्रखर राष्ट्रवादी भी रहे हैं, तो क्यों नहीं जो सांसद भारतीय भाषाओं में कोई पुस्तक लिखते हैं, भारतीय भाषाओं में कोई रचना करते हैं, हम 23 सितंबर को संसदीय पुस्तकालय की ओर से दिनकर जी के नाम पर चेयर बना कर उन सब सांसदों को, जो भारतीय भाषा में लिखते हैं, प्रोत्साहित करने का एक कार्यक्रम करें। मैं आज आपके सामने यही विषय रखना चाहता हूँ।

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान): महोदय, मैं स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

डा. अशोक बाजपेयी (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री कामाख्या प्रसाद तासा (असम): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री समीर उरांव (झारखंड): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री सकलदीप राजभर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

श्री नज़ीर अहमद लवाय (जम्मू-कश्मीर): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

†**جناب نذیر احمد لوائے (جموں-کشمیر)** : مہودے، میں بھی خود کو مانئے ممبر کے ذریعے اٹھائے گئے موضوع کے ساتھہ سمبدّھہ کرتا ہوں۔

श्री विवेक ठाकुर (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय के साथ सम्बद्ध करता हूँ।

SHRI K.C. RAMAMURTHY (Karnataka): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI PRASANNA ACHARYA (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI PRASHANTA NANDA (Odisha): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. SONAL MANSINGH (Nominated): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्री सभापति: यह विषय अच्छा है। जो माननीय सांसद associate करना चाहते हैं, वे अपने नाम की स्लिप भेज दें। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का आज 23 सितंबर को जन्मदिन है, इसलिए मैंने उनको समय दिया। उन्होंने जो विषय रखा, यह एक महत्वपूर्ण विषय है। मैं आशा करता हूँ कि सरकार इसके ऊपर ध्यान देगी। श्री सतीश चन्द्र मिश्रा जी - अनुपस्थित। श्री के.सी. रामामूर्ति।

Need to provide special financial and other assistance to Karnataka in view of heavy floods

SHRI K.C. RAMAMURTHY (Karnataka): Sir, I thank you for allowing me to raise a very important issue in Zero Hour.

---

†Transliteration in Urdu script.